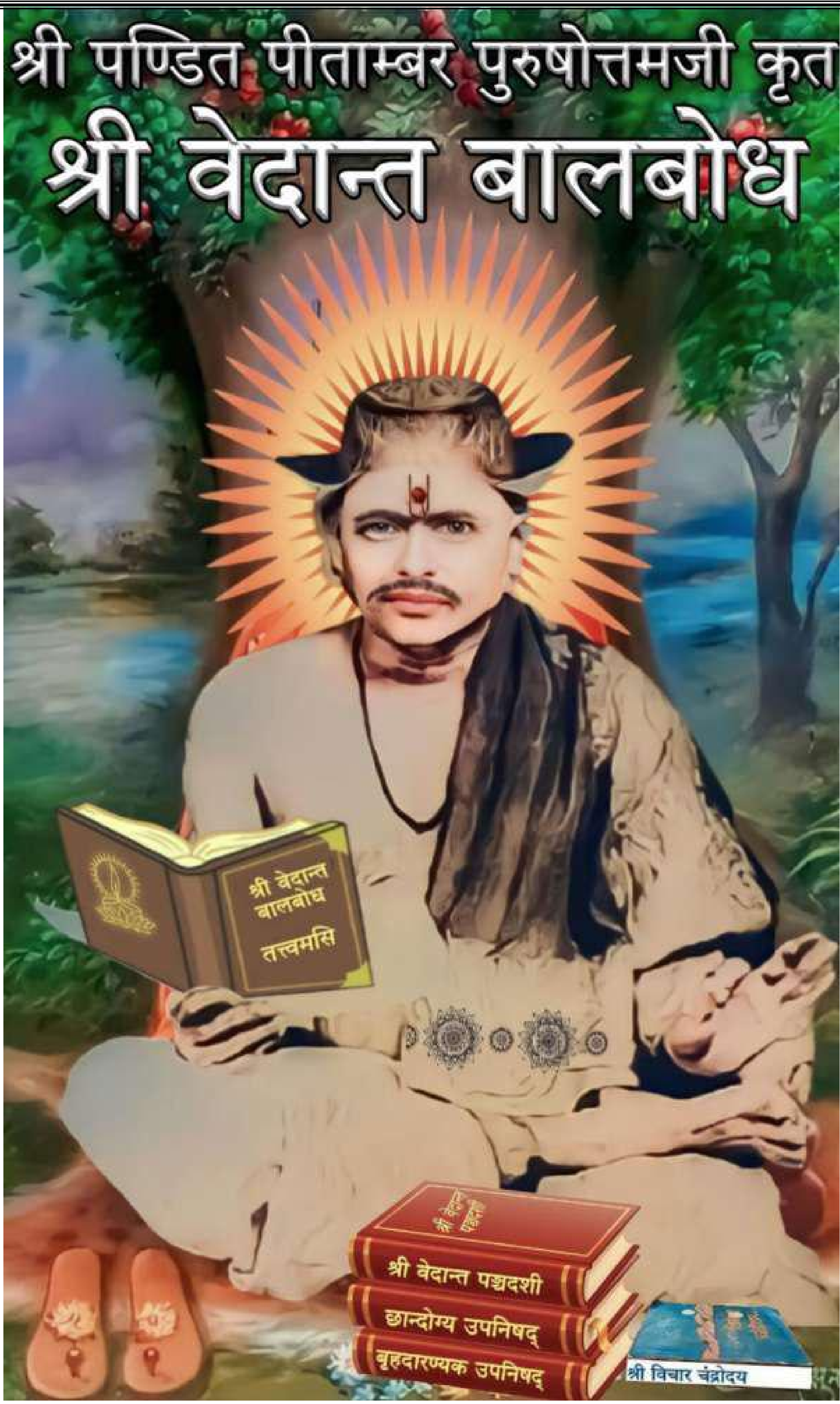
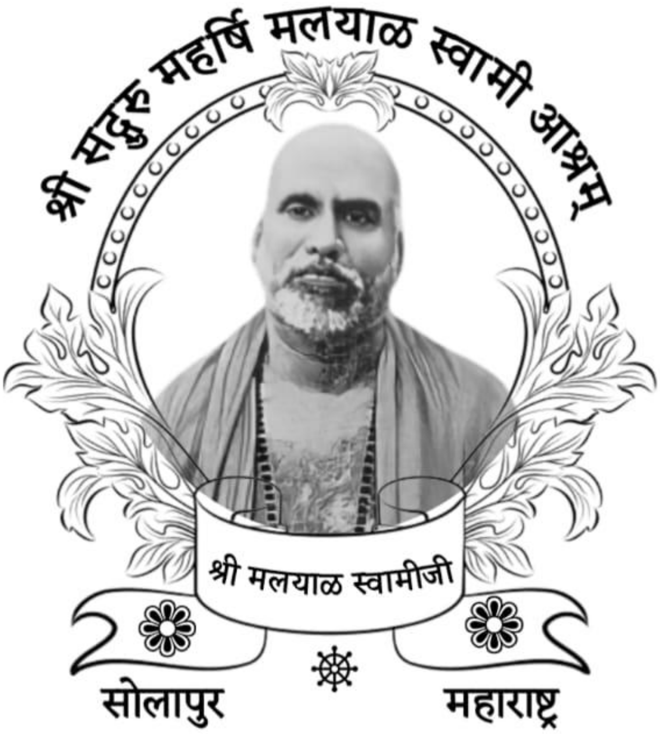

श्री पण्डित पीताम्बर पुरुषोत्तमजी कृत
श्री वेदान्त बालबोध
श्री वेदान्त बालबोध
तत्त्वमसि
श्री वेदान्त पञ्चदशी
छान्दोग्य उपनिषद्
बृहदारण्यक उपनिषद्
श्री विचार चंद्रोदय

ॐ

श्रोत्रिय ब्रह्मनिष्ठ पण्डित श्रीपीताम्बर पुरुषोत्तमजी विरचित

सटिप्पण श्रीवेदान्त बालबोधनी नामटीकासहित

श्री वेदान्त बालबोध



व्याख्यामुद्रिकया लसत्करतलं सद्योगपीठस्थितं ,
वामे जानुतले दधानमपरं हस्तं सुविद्यानिधिम्।
विप्रव्रातवृतं प्रसन्नमनसं पाथोरुहाङ्गद्युतिं ,
पाराशर्यमतीव पुण्यचरितं व्यासं स्मरेत्सिद्धये॥
शुष्कवेदान्त दन्तीश बृन्दसन्तापहारिणे ।
असङ्गानन्दयोगीन्द्रो गुरुर्विजयते तराम् ॥

Computerized by: Swami Brahmavidyananda &
Brahmachari Ajay chaitanya
Shri Mahrshi Malayalaswami Ashram,
Plot No. 48, Kalavathi nagar, M.I.D.C.
Solapur. (MH) 413006.

ग्रन्थ प्राप्ति स्थान :—

श्री सद्गुरु महर्षि मलयाळस्वामी आश्रम्, प्ला.नं.48,
कलावतीनगर (न्यू सुनिलनगर), M.I.D.C.सोलापूर (MH).
Pin. 413006.
Contact: 7843036503.

मूल्य: ३२०=०० दिनांक: विजय दशमी २४-१०-२०२३

निवेदन है कि यदि कोई पुण्यशाली मुमुक्षु इस ग्रन्थ को प्राप्त करना चाहे, कृपया हमसैं संपर्क करें। औ जो कोई Book Stall वाले इन बालबोध ग्रन्थों को बिक्री करना चाहें तो हमसैं संपर्क कर सकतें हैं।



श्री सद्गुरु श्रोत्रिय ब्रह्मनिष्ठ
पण्डित पीताम्बर पुरुषोत्तमजी

वंशावटंक निगमागमशालिबुद्धि
विज्ञानशालि मतियुक्त तथाहि लोके ॥
यः पंडितात्मकविशेषणयुक्तनाम्ना
पीतांबरेति प्रथितः पुरुपुण्यपुंजः ॥

॥ तृतीयाऽऽवृत्तिः॥

सर्व मुमुक्षुनके हितार्थ पण्डित दामोदरदेवकृष्ण औ पण्डित शिवदासदेवकृष्ण नामक स्वपौत्रनने छपवायके प्रसिद्ध किया।संवत् १९८३ इ.स. १९२७ ——————————



श्लो॥ तावद्गर्जन्ति शास्त्राणि जम्बुका विपिने यथा।

न गर्जति महाशक्तिर्यावद्वेदान्तकेसरी॥१॥

अर्थः—जैसे वनविषै श्याल नामक पशुविशेष तहांलगि गरजते हैं। जहांलगि सिंह नहीं गरजता है। तैसे अन्य सांख्य न्यायादिक-शास्त्र तहांलगि गरजते हैं। जहांलगि महाशक्तिमान् वेदान्त शास्त्ररूप सिंह नहीं गरजता है।

ॐ

“श्रीवेदान्त बालबोध”के संदर्भमैं—

श्रीपण्डित पीताम्बरजी कृत श्रीवेदान्त बालबोध ग्रन्थ प्राकृत भाषामैं महत्त्वपूर्ण सूक्ष्म औ गम्भीर है।याको श्रीगुरुमुख द्वारा अध्ययन करनेसैं अधिकारी पुरुष प्रत्यगभिन्न परब्रह्मस्वरूपकूं अनायास प्राप्त करि लेवै। यामैं लेशमात्र बी संशय नहीं। याको सम्यक् प्रकारसैं पढै, तो ‘अद्वैतसिद्धि’ आदि सर्वोत्कृष्ट ग्रन्थोंको बी समझनेमैं निश्चित सुखद होगी । परन्तु इस ग्रन्थ वर्तमानकालमैं दुर्मिल हुई है। संवत् १९८३ इ.स. १९२७ में पण्डित श्री शिवदास देवकृष्ण नामक स्वपौत्रननैं छपवायके प्रसिद्ध किया। तदन्तर पुनर्मुद्रित हुई नहीं।

हम इस ग्रन्थकी संशोधनमैं पुणे,मुंबई,दिल्ली,हरिद्वार तथा वाराणसी आदिक अनेक ग्रन्थ भण्डार में पूछताछ की हैं। लैकिन लाभ नहीं हुआ। अंतमैं यहाँ सोलापूर नगरमैं एक सज्जन साधकके पास हस्तलिखित प्रति मिली। याको आधारित करिके हमारे एक सुहृदने पुस्तकरूपमैं छपवाया। लैकिन मुद्रणामैं गडबड हुई,इसलिए पढने लायक नहीं रहा। जोभी हो हम उन सन्मित्रके आभारी हैं। कृतज्ञताएँ समर्पण करतें हैं। जिसकिसी तरह जिज्ञासाके बलपर इस श्रीवेदान्त बालबोध ग्रन्थको श्रोत्रिय ब्रह्मनिष्ठ परमपूज्य सद्गुरु श्रीनागभूषणम् बिर्रूजी महाराजश्रीके श्रीमुखसैं हमनैं श्रवण करि है। औ हमारे कई विद्यार्थियोंको पढाया बी है। अब सो मुद्रित ग्रन्थ बी अभाव हुई है।

इस वेदान्त बालबोध ग्रन्थका अद्भुत महिमाको सुनिके बहुतसैं विद्यार्थीगण अध्ययन करनेको तलपत हैं।उनकी तीव्रतर जिज्ञासा देखिके, इस ग्रन्थको सुधारिके, विश्वभरके सर्व मुमुक्षुजनोंके अध्ययन सुखद हो, औ सभी का कल्याण हो,या अभिप्रायसैं इस दुर्मिल महत् ग्रन्थको फेरि प्रकट करनेअर्थ साहस करूं हूँ। हमारे विद्यार्थी तपस्वी'अजय चैतन्यजीने', हमारे सुहृद द्वारा पूर्व मुद्रित श्रीवेदान्त बालबोध ग्रन्थको आधारित करिके 'डाक्युमेंट' बनायके दिया। उसको हमनैं'कंप्यूटरैजिंग'करी हैं।विषयके अनुसार जगह जगह श्रीपण्डित पीताम्बरजीके हिन्दी टिप्पणके अलावा संस्कृत टिप्पण बी निवेश करै है। परिशिष्ट में हमारे श्रीगुरुदेव श्रीनागभूषणम् बिर्रुजी द्वारा रचित वेदान्त पारिभाषिक शब्दोंका 'नियमावली'भी मुमुक्षुओंको बहुत उपयोगी जानिके जोड दिये हैं। औ श्री पण्डित पीताम्बरजी कृत अनेक स्तोत्र औ अन्यान्य स्तोत्र भी दुर्मिल जानिके जोडे हैं। इस ग्रन्थकी अनेकवार 'प्रूफरीडिंग' करनैं में हमारे विद्यार्थी 'श्रीचन्द्रमोहन येमुल' बहुत मदद की है। इन दोनों सत् विद्यार्थियोंको ईश्वरकी तरफसैं हमारा आशीर्वाद है। आनन्द है कि जिसकिसी प्रकारसैं श्रीपण्डित पीताम्बरजीके निस्सीम कृपासैं इस अद्भुत ग्रन्थकी पुनरुज्जीवन हुई है। दुनियाभरके सभी मुमुक्षुओंको इस ग्रन्थ प्राप्तहो,या उद्देशसैं इस महत् ग्रन्थको मुद्रित किये हैं,कृपया श्रीगुरुमुखसैं अध्ययन करें। स्वतन्त्रसैं कदापि करै नहीं। इस ग्रन्थकी सुधारनेमैं अनजानेमें कुछ तृटियाँ हुई हो, तो सुहृद विद्वज्जनोंने कृपया सँभार लेवै। ऐसी हमारी विनम्र प्रार्थना है।आशा करतें हैं ईश्वरकी औ श्रीपण्डित पीताम्बर पुरुषोत्तमजीके आशीर्वाद हम सबको सदा प्राप्त हो ॥

लोकास्समस्ताःसुखिनो भवन्तु

ॐ तत्सत् ॐ

चराचर सुखाभिलाषी

स्वामी ब्रह्मविद्यानन्द